एक ही सीढ़ी, उतर जाओ या चढ़ जाओ

कहते हैं मन से सुख, मन से ही दुःख। मन ही सबकुछ। मनुष्य शब्द ही मन को इंगित करता है, कि मन ही सबकुछ है। मनुष्य शब्द ही मन से बना है। यूं तो मनुष्य के लिए अगल अलग भाषाओं में बहुत से शब्द हैं, जैसे उर्दू में आदमी कहते हैं, वह भी प्यारा शब्द है, मगर वह कीचड़ की खबर देता है कमल की नहीं। आदमी शब्द बनता है मिट्टी से। जो मिट्टी से बनाया गया, ऐसा आदमी का अर्थ है। कमल यूं तो कीचड़ से ही पैदा होता है, लेकिन कमल कीचड़ ही नहीं है। कीचड़ के भीतर जो कीचड़ नहीं है, उसकी अभिव्यक्ति है। लेकिन फिर उसे कीचड़ में लथोड़ देना, सुंदर को असुंदर बना देना है। सत्य को असत्य कर देना है।

- ब्र. कु. गंगाधर

तो मन ही मनुष्य के बंधन और मन ही मोक्ष का कारण है। जो मन विषयों में आसक्त होगा, वो बंधन का कारण होगा तथा जो मन विषयों से परामुख होगा, वो मोक्ष का कारण होगा।

मन को अलग अलग धर्मों में अलग अलग शब्द दिये गये हैं। यहूदियों में, ईसाइयों में, मुसलमानों में एक कहानी है कि परमात्मा ने मिट्टी का पुतला बनाया और उसमें सांसें फूंक दीं। ऐसे पहले आदमी का, अर्थात् आदम का जन्म हुआ। आदम का अर्थ है मिट्टी का पुतला। सच है यह बात, लेकिन बहुत अधूरी अधूरी। यह केवल मनुष्य का बाहरी रूप है। निश्चित ही मिट्टी है आदमी, लेकिन मिट्टी से ज़्यादा भी है। हमारा शब्द मनुष्य, उस ज़्यादा की खबर देता है। मिट्टी है, मगर मिट्टी ही नहीं है। मिट्टीमय है, मगर मिट्टी से भिन्न भी है। मनुष्य 'मन' है। अंग्रेजी का शब्द है 'मैन'। ये मन का ही रूपांतरण है। वह मनुष्य का ही भिन्न रूप है। दोनों का अद्गम एक ही सूत्र से हुआ है - मन से।

मन का अर्थ होता है - मनन की प्रक्रिया, मनन की क्षमता, सोच विचार की सम्भावना। मिट्टी तो क्या सोचेगी! मिट्टी तो सोचना भी चाहे तो क्या सोचेगी! कौन है जो मनुष्य के भीतर सोचता और विचारता है? कौन है जो मनुष्य के भीतर मनन करता है? वह चैतन्य है। इसलिए मन सिर्फ मिट्टी से ज़्यादा नहीं है, और भी कुछ है। मिट्टी के जो पार है, उसके भी जो पार है, उसकी तरफ इंगित है, इशारा है।

मनन की प्रक्रिया, चैतन्य की सम्भावना है। चैतन्य हो, तो ही मनन हो सकता है। इसलिए कोमा में विक्षिप्त पड़े हुए मनुष्य को मनुष्य नहीं कहना चाहिए। वहाँ तो मनन की क्रिया नहीं हो रही है। मनन की प्रक्रिया समाप्त हो गई है। वहाँ तो मिट्टी का आकाश से सम्बन्ध टूटा-टूटा है, उखड़ा-उखड़ा है। बीच की सीढ़ी ही गिर गई है।

तो मन है सीढ़ी। एक छोर लगा है मिट्टी से और दूसरा छोर छू रहा है अमृत को। सीढ़ी एक ही है। जिस सीढ़ी से तुम नीचे आते हो, उसी से ऊपर भी जाते हो। ऊपर और नीचे आने के लिए दो सीढ़ियों की ज़रूरत नहीं होती। सिर्फ दिशा बदल जाती है।

यूं भी हो सकता है कि आप सीढ़ी पर चढ़ते हुए आधी यात्रा पूरी कर लिये हो और एक सोपान पर खड़े हो, और दूसरा आदमी सीढ़ी से उतर रहा है। वह भी उसी सोपान पर खड़ा है। दोनों ही सोपान पर हैं। एक चढ़ रहा है, एक उतर रहा है। एक ही सोपान पर हैं, फिर भी बहुत भिन्न हैं , क्योंकि एक चढ़ रहा है और एक उतर रहा है। एक ही जगह पर हैं, मगर उनका एक ही कोटि में स्थान नहीं बनाया जा सकता। एक उतर रहा है, गिर रहा है। एक चढ़ रहा है, ऊर्ध्वगामी हो रहा है।

मन वो सीढ़ी है, अगर विषयों में आसक्त हो जाये तो उतरना शुरु हो जाता है। विषय अर्थात् पृथ्वी, मिट्टी। और अगर विषयों से अनासक्त हो जाये तो चढ़ना शुरू हो जाता है। सीढ़ी वही है। जो विषयों में जीता है, वह रोज़ रोज़ नीचे की तरफ ढ़लान पर खिसलता जाता - फिसलता जाता।

उतरना हमेशा आसान होता है, क्योंकि गुरुत्वाकर्षण ही खींच लेता है। हमें कुछ करना नहीं पड़ता। चढ़ाव कठिन है। जैसे कोई पहाड़ पर चढ़ रहा हो, तो जैसे जैसे ऊँचाई पर पहुंचता है, वैसे वैसे कठिनाई होती है। तब छोटा सा भार भी बहुत भार मालूम होता है। एक छोटा सा झोला भी कंधे पर लटकाकर चलना मुश्किल लगता है। तो जैसे जैसे यात्री ऊपर पहुंचता है, वैसे वैसे वज़न उसे छोड़ने पड़ते हैं। वही अनासक्ति है, वज़न छोड़ना। तो आपको अगर श्रेष्ठ और सुंदर बनना है, तो वज़न को छोड़ना होगा। अर्थात् दुनियावी बातों, दुनियावी आकर्षण व दुःख देने वाले जो भी कारक हैं, उन्हें छोड़ना होगा। तब ही आप ऊँचाइयों पर चढ़ सकेंगे, अर्थात् ऊर्ध्वगामी होंगे, पर मन रूपी सीढ़ी से ही। मन की ऊर्ध्वगामी स्थिति से ही महान बनेंगे। सीढ़ी तो एक ही है। अब आपको तय करना है कि मन रूपी औजार को किस ओर मोड़ना है।

आत्म अभिमानी स्थिति ऐसी हो, बाबा की याद स्वतः आती रहे

स्वयं को पूजनीय बनाना, माना अभी से जीवन में सच्चाई, सफाई और पवित्रता का फाउण्डेशन मज़बूत करना। इसी आधार से ही पूजनीय व पूर्वज बनना है। ये तपस्या हमें मन इच्छित फल देगी।

साइलेंस में बैठना कितना अच्छा लगता है। वह साइंस है, यह साइलेंस है। कमाल है बाबा की, दुनिया में धमाल लगी पड़ी है और हम बाबा की कमाल देख रहे हैं तो कितना मीठा बाबा है! हमको भी मीठा बनाने के लिए मुरली ऐसी चलाता है। मुरली का मनन चिंतन हमें पास विद ऑनर में ले आयेगा। पास्ट इज़ पास्ट। प्रेज़ेन्ट में मैं कौन हूँ, किसकी हूँ और मैं क्या कर रही हूँ। मेरी यह तीन बार की ओम शांति ने प्रैक्टिकल लाइफ में बहुत मदद की है। मैं कौन, मेरा कौन? मैं कौन तो इससे लाइट हो जाते हैं और मेरा कौन तो इससे माइट आ जाती है, क्योंकि वो सर्वशक्तिवान है। ऐसे समय में बाबा ने कर्मों की गुह्य गति का इतना रहस्य सुनाया है, जिससे हम जितना ऊँचा बनना चाहें, बन सकते हैं। हरेक के लिए दिल में मेरी भावना है कि जैसे बाबा सिम्पल है, ऐसे हर एक सिम्पल और सैम्पल बने। बाबा शब्द मुख से पीछे निकलता है, बोलने के पहले ऑटोमेटिक आत्म-अभिमानी स्थिति हो जाती है। थोड़ा भी देहभान है तो याद करना मुश्किल है। बाबा को याद करना न पड़े, याद आती रहे। बाबा मिलन का जो अनुभव है, बाबा की याद का जो अनुभव है। भक्ति में याद करते थे, पुकारते थे, फिर सर्वव्यापी के ज्ञान से शान्त हो जाते थे। अन्दर भगवान को बाबा कहना, मुझे नहीं आता था। भगवान जो सारे विश्व का कल्याणकारी भोलानाथ है,

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

बाबा की जितनी जान-पहचान व ज्ञान ऐसा है, जो तीसरा नेत्र खुल गया है। झाड़ याद दिलाता है, हम नीचे तपस्या में बैठे हैं। बनियन ट्री का मिसाल एक्यूरेट है। झाड़ सारा फैला हुआ है, फाउण्डेशन है ही नहीं। ऐसी दुनिया से क्या प्रीत! अभी इस दुनिया से उस नई दुनिया में ले जाने के लिए बाबा ने अपना बना लिया है इसलिए शुक्रिया बाबा, अन्दर से आवाज़ आती है। संसार में रहते यह भी हमारा ईश्वरीय परिवार का संसार है। गुल्ज़ार दादी को कैसे निमित्त बनाके बाबा ने साकारी भासना दी है। कोई नहीं कहेगा मैंने साकार में बाबा को देखा नहीं है। बाबा का बनने के बाद हमारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति से कदम पर कदम में पदमों की कमाई जमा होती रहती है। बाबा ने कहा है जैसा हमारा पुरूषार्थ होगा, ऐसा हमारा मन्दिर बनेगा द्वापर में। सतयुग में तो महल होंगे। द्वापर से ले करके पुजारी लोग हमारी पूजा करेंगे इसलिए अभी पूजनीय क्वालिटी बनना है। तो पूजनीय योग्य बनना माना न सिर्फ महिमा करे, न सिर्फ गायन करे पर दिल से सच्चाई और प्रेम, जैसे बाबा की सूरत और सीरत अनुभव कराती है, ऐसे हम बच्चों को भी अपनी सूरत, सीरत बनानी है। अभी चांस है आपको ऐसा बनने का, जिसे बाबा देखे तो खुश हो जाये। ऐसी स्थिति हमारी हो तो हम सब ऐसे बाबा की नज़रों से निहाल हो जाएं।

अशरीरी भव का अभ्यास अभी से ही करें

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

हमारे बाबा का दिया हुआ एक महामंत्र है, ओम शांति। इस एक ही शब्द में हमें अपने स्वरूप की, बाबा की और अपने घर की स्मृति आ जाती है, क्योंकि हम भी शांत स्वरूप हैं। हमारा बाबा भी शांति का सागर है और हमारा घर भी शांतिधाम है। अपने स्वरूप में स्थित होने से शांत स्वरूप हो जाते हैं। तो जहां शान्त स्वरूप हो जाते हैं, वहाँ हलचल ऑटोमेटिकली बंद हो जाती है। संगमयुग का जो अन्तिम काल है, उस समय की हमको क्या तैयारी करनी है? अन्तिम समय के हिसाब से बाबा ने दो शब्द कहे हैं - एक तो अचानक होना है और एवररेडी रहना है। तो सबको ये शब्द याद रहते हैं ना? कभी भी पर नष्टोमोहा भी रहो और स्मृति स्वरूप भी रहो। तो अन्तिम पेपर में पास होने के लिए अभी से ही हमको क्या लक्ष्य रखना चाहिए, उसकी योजना अभी से बना लेनी चाहिए। बाबा कहते,

अंतिम समय हमारा अच्छा हो, उसके लिए अभी से ही अशरीरी पन के अभ्यास की बहुत ज़रूरत है। नहीं तो अंत हमारा जैसा चाहते हैं, वैसा नहीं होगा।

बुलावा हो सकता है नेक्स्ट जन्म के लिए। इसीलिए बाबा ने अचानक के लिए कई बातें सुनाई हैं। जैसे आप अपनी हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो क्योंकि सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है। इसलिए ऐसे समय अभी से अशरीरी भव का अभ्यास करो। ताकि अन्त हमारी श्रेष्ठ हो। यह मन चारों ओर के दृश्य देख करके विचलित होगा, लेकिन इस मन की कन्ट्रोलिंग व रूलिंग पॉवर हमारे हाथ में हो तब सेकण्ड में अशरीरी हो सकेंगे। कोई भी आकर्षण हमें खींचे नहीं, तभी हम पास विद ऑनर होंगे। हम जिस बात को नहीं चाहते हैं वो होता तो है, यह सबके जीवन का अनुभव है। सभी अभ्यास करते हैं कि व्यर्थ विचार नहीं आने चाहिए। लेकिन फिर भी आ ही जाते हैं, भिन्न-भिन्न रूप से माया आ जाती है। तो न चाहते भी क्यों आती है? कारण है बहुकाल से बॉडी कॉन्शियस में रहने का अभ्यास, जो नैचुरल है वो विघ्न डालता है। तो यह अशरीरी बनने का अभ्यास अगर हम बहुकाल से नहीं करेंगे तो बहुकाल की मदद हमको नहीं मिलेगी।

हम मांगने वाले नहीं, अधिकारी हैं

कोई भी चीज़ मांगने से उतनी ही मिलेगी, फिर खत्म होगी, फिर मांगेंगे। लेकिन हमें तो परमात्मा ने भरपूर कर दिया। बाबा ने कहा मांगने से मरना भला। हम तो हैं ही अधिकारी, फिर किसी से मांगें क्यों!

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

भगवान के घर में हम सब भगवान के बच्चे बैठे हैं, जो 63 जन्म के पुराने भक्त हैं। हमें भक्ति के फल में स्वयं भगवान मिला है, इसलिए दिल से निकलता - ओ सहारा देने वाले दिल कहे तेरा शुक्रिया... सदा यही खुशी का गीत गाते ओ बाबा, ओ मेरे भाग्य विधाता, तूने मुझे अपनी गोदी में बिठा लिया। हमें सब प्रकार के वरदान दे दिये, बिन मांगे हीरे मोती, माणिक सब दे दिये। बाबा ने हमें अपना सर्वस्व दे दिया। हम ज्ञान सूर्य बाप और ज्ञान चन्द्रमा के लक्की सितारे हैं, बच्चे हैं। उसने हमें चमकता हुआ कोहिनूर का हीरा बना दिया। हम वह शिव शक्ति पाण्डव सेना हैं जिनको स्वयं भगवान ने टाइटिल दिया। बाबा ने हमें जहान का नूर बनाया है, जो सारी विश्व का जीवन सहारा है, जो सर्वशक्तिमान है। उसने हमें प्यार के झूले में झुलाया है। उसने हम कमज़ोर आत्माओं को आकर बलवान बनाया है। इसलिए हम यही गीत गाते हैं ओ बाबा, ओ मीठा बाबा, तूने हमें सब कुछ दे दिया। जीवन में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं जो मैं आपसे मांगूँ। जब मैं किसी के मुख से सुनती हूँ कि बाबा आप शक्ति देना... मैं कहती, शक्ति भी क्यों मांगते। क्या मेरे मांगने से वह देगा? हम मांगने वाले भक्त नहीं, हम तो अधिकारी बच्चे हैं। अरे लुटाने वाला कहता तू लूट...जितना चाहे उतना लूट। जितना लूटेंगे-लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो स्थिति कभी डगमग नहीं होगी। बाबा ने हम बच्चों पर चोटी से पांव तक ऐसा वरदान का हाथ फेर दिया जो हमें कोई हिला नहीं सकता। सिर्फ दिल से गीत गाओ - मुझे तो मिल गया...कौन? प्यारा बाबा। जितने दिल-जिगर से रूहरिहान कर सकते, खुशी में झूल सकते उतना झूलो, यही हमारे जीवन की लॉटरी है। कोई कहते मुझे यहाँ बहुत प्यार मिला, आनन्द मिला, अच्छा योग लगा... मैं उसकी दिल को सच्चा नहीं मानती। आप नये-नये फूलों को तो बाबा-बाबा कह उसके प्यार में डूब जाना चाहिए। एक भौंरा भी फूल के पीछे फिदा हो जाता। तो खुद से पूछो हमें फूल बनाने वाला बाप, उस पर मैं भौंरे की तरह फिदा हूँ? दीवानी हूँ, मर गई हूँ, मिट गई हूँ या फिदा हूँ? हमारा बाबा है जादूगर... हमें उस जादूगर की जादूगरी पर फिदा हो जाना है। सचमुच उसने हमें अपना जादू लगा दिया। मैं कहती शल ऐसा जादू तो सबको लगे, इससे कोई जुदा न रह जाए। यह जादू एक-एक पर लगे तो अहो भाग्य! इससे बड़ी दुनिया में कोई चीज़ नहीं।